प्रैस विज्ञप्ति

गुरुकुल ही देश का भविष्य है : स्वामी सुमेधानन्द

देहरादून 6 जून। पौन्धा स्थित श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरूकुल पौंधा, देहरादून में वार्षिकोत्सव एवं सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के पश्चात् संस्कार–सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसका संचालन दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. अजीत कुमार ने किया। हरयाणा से पधारे कुलदीप भास्कर के संस्कार विषयक भजन से संस्कार सम्मलेन का आयोजन हुआ। भजन के उपरान्त मुम्बई से पधारे वैदिक मिशन के अध्यक्ष पं. सोमदेव शास्त्री जी ने कहा कि परिवार में पत्नि को चाहिए वह अपने पति को समझाये कि वह कभी भी गलत कमाई को घर में न लाये। पवित्र कमाई जो परिश्रम करके लायी गई हो उसी को ही लाये, जिससे परिवार में सुख का सदैव वास हो। इसी विषय को और अधिक विस्तृत करते हुए कहा कि आज संसार में संस्कार की कमी है इसका कारण कोई और नहीं अपितु घर में उपस्थित माता–पिता ही हैं। क्योंकि हमारे माता–पिता अपने पुत्र–पुत्रियों को अच्छे आचरण की शिक्षा नहीं देते। अगर माता–पिता बच्चों को अच्छी शिक्षा देने लग जायें तो वो बच्चे श्रेष्ठ समुन्नत हो सकते हैं। गुरुकुल पुठ के आचार्य धर्मेश्वरानन्द ने कहा कि सत्संग का आभाव आज सर्वत्र दिखायी देता है। जब व्यक्ति में संस्कार होता है तब उस व्यक्ति की विशेषता बढ़ जाती है। मनुष्य को मनुष्य बनाने की बात स्वामी दयानन्द सरस्वती से ही सिद्ध होती है। वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि आज समाज में आलस्य, क्रोध आदि का छोड़ने की आवश्यकता नहीं है अपितु हमें अपने प्राणों को अपने वश में करना होगा और प्राणों को अपने वश में कर लेने मात्र से सब समस्याओं का समाधान हो जायेगा।

सांयकालीन सत्र में विद्या–व्रत सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें गुरुकुल के विद्यार्थियों ने अपन भाषण, भजन, कविता व्याख्यान आदि को प्रस्तुत किया। फिर **उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के सचिव गिरिश अवस्थी** ने संस्कृतप्रेमी छात्रों के संसार का सविद्यार्थी बाताया तथा आर्षपाठविधि को सर्वश्रेष्ठ बताया। गिरिश अवस्थी के पश्चात् **राज्यस्थान लोकसभा स्पीकर सांसद सुमेधानन्द सरस्वती** ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत को यदि कोई नई दिशा व दशा दे सकता है तो वह गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली ही है। आगे कहा कि आज बाहर के पढ़े–लिखे विद्यार्थी केवल में तुच्छ पैसों को प्राप्त कर नौकरी की तलाश करते हैं परन्तु गुरुकुल के विद्यार्थी ऐसे होतें हैं जो स्वयं में इतने प्रतिभावान् होते हैं कि हजारों रुपयों की नौकरी उनके चरणों में घुमती हैं। छात्रों को निरन्तर आगे बढ़ने का आशिर्वाद दिया तथा प्रत्येक समय संस्कृत के छात्र–छात्राओं का साथ देने का आस्वाशन दिया।

अन्त में गुरुकुल के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती तथा आचार्य धनंजय ने सभी का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन किया।

इस अवसर पर पं. ओमप्रकाश वर्मा, ज्वलन्तकुमार, पं. धर्मपाल शास्त्री, सखवीर सिंह, आचार्य यज्ञवीर शास्त्री, सत्यपाल पथिक, सत्यपाल सरल, आचार्य विश्वपाल जयन्त, आचार्य चन्द्रभूषण शास्त्री, आचार्य रवीन्द्र कुमार, अजीत कुमार आदि उपस्थित रहें।

प्रेस सचिव :–

–शिवदेव आर्य

श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरूकुल
पौंधा, देहरादून।
मो.–8810005096